BA - Part - II Systems of Psychology.
Paper - IV

Q. शिक्षण एवं प्रत्यक्षीकरण के क्षेत्र में गेस्टाल्ट मनोविज्ञान के योगदान की व्याख्या करें।

Ans. मनोविज्ञान के अन्य सम्प्रदायों के समान गेस्टाल्ट मनोविज्ञान एक सम्प्रदाय के रूप में भी काफी महत्वपूर्ण होता है। इस स्कूल द्वारा अन्य सम्प्रदायों के समान विभिन्न पहलूओं पर स्पष्ट विचार व्यक्त किये गए हैं। एक सम्प्रदाय (System) के रूप में गेस्टाल्ट मनोविज्ञान के योगदान निम्नांकित हैं।

1. मनोविज्ञान की परिभाषा एवं विधियाँ -
Definition and methods of Psychology) :→
मनोवैज्ञानिकों जैसे - कोहलर, कोफ्का तथा वर्दीमर का मत था कि मनोविज्ञान तात्कालिक अनुभूति (immediate experience) का अध्ययन करता है जिसमें मूल रूप से स्मृति, चिन्तन, प्रत्यक्षण एवं सीखना जैसे कार्यों का अध्ययन किया जाता है। वे इसकी शुरुआत प्रत्यक्षण के अध्ययन से किए और बाद में अन्य क्षेत्रों का भी अध्ययन किया है लेकिन उत्तरकालीन गेस्टाल्टवादी जैसे कर्ट लेविन ने इस बात पर बल डाला कि व्यवहार को भी मनोविज्ञान को ~~सम्मि~~ सम्मिलित किया जाना चाहिए। गेस्टाल्टवादियों के अनुसार मनोविज्ञान प्राणी के व्यवहार तथा तत्कालीन अनुभूति दोनों का अध्ययन करता है। इन लोगों ने प्रयोग तथा अन्तर्निरीक्षण को मनोविज्ञान के उत्तम विधि बतलायें हैं।

2. अभिगृहीत (Postulates) :→
व्यवहारवाद के समान गेस्टाल्ट मनोविज्ञान ने भी अपने विचारों के स्पष्टीकरण के लिए कुछ अभिगृहीत का प्रतिपादन किया है।

ऐसे अभिगृहीत के दो मुख्य प्रकार बतलाये गए हैं- प्राथमिक (Primary) तथा द्वितीयक (Secondary)। गेस्टाल्ट मनोवैज्ञानियों का समग्र-अंश मनोविज्ञान (Whole Part Psychology) एक प्राथमिक अभिगृहीत का उदाहरण है इसके अनुसार समग्रता के प्रत्यक्षण उसके अंश के प्रत्यक्षण का योग नहीं होता है। समग्रता की विशेषताएँ अंश की विशेषताओं से भिन्न होता है। समकृतिकता के नियम, प्रत्यक्षणात्मक संगठन के नियम, सीखने के बारे में असांतत्यता विचार कुछ महत्वपूर्ण द्वितीयक अभिगृहीत के उदाहरण हैं।

3. मन-शरीर समस्या (mind-body Problem) :→

अनुसार मन-शरीर समस्या का आदर्श समाधान समकृतिकता का नियम है लेकिन यह समानान्तरवाद वुण्ट तथा टिचेनर (Titchener) के समानान्तरवाद से भिन्न था। गेस्टाल्ट-वादियों के लिए यह एक मनोशारीरिक समानान्तरवाद था क्योंकि उसमें प्रत्याक्षेत्र या मानसिक क्षेत्र तथा मस्तिष्कीय क्षेत्र में बिन्दु से बिन्दु का सम्बन्ध था जबकि संरचनावादियों के लिए इन दोनों के बीच मनो-दैहिक समानान्तरवाद था क्योंकि इसमें मानसिक घटना तथा दैहिक घटना में बिन्दु से बिन्दु का सम्बन्ध होता है इन दोनों क्षेत्रों के अलावा एक और क्षेत्र जिसे भौतिक क्षेत्र या भौगोलिक क्षेत्र के अलावा एक और क्षेत्र जिसे ~~भौतिक क्षेत्र~~ प्रत्याक्षित क्षेत्र या मानसिक क्षेत्र से नहीं मिल सकता है जैसा कि हमें विभिन्न तरह के भ्रम के प्रकार में होते हैं।

4 आंकड़ों की प्रकृति (Nature of data) :→

तात्कालिक अविश्लेषित

अनुभव से प्राप्त आँकड़े ही गेस्टाल्ट मनोविज्ञान के लिए प्रमुख आँकड़े ही गेस्टाल्ट मनोवैज्ञानिक ने इस तरह के आँकड़े को 'प्रदत्त' (given) कहा जाता है प्रत्यक्षण के अध्ययन में 'प्रदत्त' का प्रयोग काफी होता है वे तात्कालिक अविश्लेषित अनुभूति के आधारों पर प्राप्त आँकड़ों को स्वीकार कर गेस्टाल्ट मनोवैज्ञानिकों द्वारा संरचनावादियों से काफी सादृश्यता दिखलायी है। लेकिन गेस्टाल्ट मनोविज्ञानी संरचनावादी के अर्थ भिन्न थे।

गेस्टाल्टवादियों ने सीखने तथा समस्या समाधान के क्षेत्र में व्यवहारात्मक आँकड़ों को भी स्वीकार किया गया है। इस तरह से गेस्टाल्ट मनोविज्ञानियों द्वारा व्यवहारवाद के मनोविज्ञान को काफी स्वीकार किया गया है यह कहा जाता है कि गेस्टाल्ट मनोविज्ञानी संरचनावाद की तुलना में व्यवहारवाद के मनोविज्ञान को अधिक प्रदर्शित किये। इनके बावजूद गेस्टाल्ट मनोविज्ञान व्यवहारवादीयों से इस अर्थ में भिन्न हैं वे लोग व्यवहार का अध्ययन करके उसे मनोवैज्ञानिक क्षेत्रों से न केवल पर्यावरणी कारकों से सम्बन्धित करना चाहते हैं।

5. चयन का नियम (Principle of selection) :→

गेस्टाल्टवादियो ने प्रत्यक्षणात्मक संगठन के विभिन्न नियमों का प्रतिपादन किया जिसके सहारे इस बात की व्याख्या होती है कि किसी विशेष आकृति के प्रकार के प्रत्यक्षण के लिए व्यक्ति चयन करता है उन्होंने यह स्पष्ट किया कि प्रत्यक्षण के क्षेत्र में सभी अंशों की भूमिका होती है। अतः उनके लिए यह जानना अधिक महत्वपूर्ण है कि ये सारे अंश किस तरह से संगठित या संगठन के लिए चयनित होते हैं व्यक्ति क्यों क्षेत्र के कुछ अंश को आकृति के रूप मे तथा क्यों क्षेत्र के कुछ अंश को पृष्ठभूमि के रूप में प्रत्यक्षण करता है।

Scanned by TapScanner

6. सम्बन्ध का नियम (Principles of connection):-

गेस्टाल्टवादियों के लिए सम्बन्ध की समस्या का स्वरूप कुछ वैसा नही था जैसा कि साहचर्यवादियों तथा संरचनावादियों के लिए था। संरचनावादियों के लिए चेतन के तत्व साहचर्य के विभिन्न नियमो द्वारा सम्बन्धित होते हैं इसे गेस्टाल्टवादियों के बण्डल प्राक्कल्पना कहा जाता है इसे इन लोगो ने अस्वीकृत कर दिया हैं क्योंकि इन लोगो का मत था कि समग्रता का प्रत्यक्षण उसके अंशो के प्रत्यक्षण का योग नही होता है इसलिए उसके अंशो को जोड़कर समग्रता का निर्धारण करने का प्रत्यक्षण करना एक बेकार एवं अर्थहीन प्रयास है गेस्टाल्टवादियों का मत है कि यदि बण्डल प्राक्कल्पना को सही मान लिया जाता है तो प्रत्यक्षण को साधारण एवं आरंभिक प्रत्यक्षणो का मात्र एक योग माना जाएगा। जो वह वास्तव में नही है गेस्टाल्टवादियों ने यह भी स्पष्ट किया कि प्रत्यक्षणात्मक संगठन के नियम को सम्बन्ध का नियम कहना अनुचित होगा क्योंकि इन नियमों से यह पता चलता है कि किस तरह से एक विशेष संरचना की उत्पत्ति होती है।

निष्कर्ष में हम कह सकते है कि एक सम्प्रदाय के रूप में गेस्टाल्ट मनोविज्ञान अन्य सम्प्रदायो से कम महत्वपूर्ण नही था। इनके विभिन्न अभिग्रहीत अभी भी आधुनिक शोध एवं प्रयोग के लिए एक महत्वपूर्ण प्रेरणा स्रोत है।

Dr. Randhir Kumar
Dept of Psychology 9570435954
Paper - IV Systems of Psychology.
V.R.C Rosera Samastipur

Scanned by TapScanner